2.12.24

DATE
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-15 'सिंगापुर की यात्रा')।
भाग-1
पुस्तक - नवतरंग-7

सुप्रभात प्यारे बच्चो।
आज हम हिंदी की पाठ्य पुस्तक नवतरंग-7 के पृष्ठ-124 पर लिखे पाठ-15 'सिंगापुर की यात्रा' के विषय में पढ़ेंगे।

जो बच्चे घर बैठकर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, वे अपनी पुस्तक का पृष्ठ 124 खोलें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। बच्चो! यह पाठ 'अक्षय कुमार दीक्षित' द्वारा लिखा गया है। उन्होंने अपने अनुभव, जो सिंगापुर की यात्रा के समय किए उनका वर्णन इस पाठ में उकेरा है। उन्होंने बताया है कि सिंगापुर एक छोटा-सा द्वीपीय देश है जो अपने निवासियों की सूझ-बूझ और मेहनत से दुनिया के सबसे विकसित देशों की पंक्ति में सम्मिलित हो गया है। सिंगापुर की संस्कृति, उसकी सफलता के कारणों और सिंगापुर से भारत के संबंधों की खोजबीन करता है उनका यह यात्रा-वर्णन।

कुछ दिनों पहले लेखक को अपने साथियों के साथ सिंगापुर की यात्रा करने का अवसर मिला। वहाँ पर जाने से पहले उन्होंने वहाँ के मौसम, खान-पान और पर्यटक-स्थलों के बारे इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कर ली। आखिर वह दिन आ गया, जब उन्हें सिंगापुर के लिए उड़ान भरनी थी। लेखक और उनके मित्रों ने दोपहर बाद सवा बजे सिंगापुर के लिए उड़ान भरी। लगभग 6 घंटे की यात्रा के बाद वे रात्रि के लगभग 10 बजे सिंगापुर के चांगी हवाई अड्डे पर उतरे। लेखक और उनके मित्रों को होटल तक पहुँचाने के लिए एक बस खड़ी थी। उसमें सवार होकर वे होटल में पहुँचे। होटल में उनके लिए विशेष रूप से भारतीय शाकाहारी भोजन का प्रबंध किया गया था।

कक्षा- सातवीं सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-15 'सिंगापुर की यात्रा')

भोजन करके वे अपने-अपने कमरों में चले गए। अगला पूरा सप्ताह उन्होंने सिंगापुर देखने और समझने में लगाया।

सिंगापुर और भारत का हज़ारों साल पुराना साझा इतिहास है। एक समय था, जब वहाँ भारतीय राजा ही राज करते थे। सिंगापुर का नाम ही संस्कृत शब्द 'सिंहपुर' से बना है।

सिंगापुर के नागरिकों और वहाँ काम करने वाले लोगों का एक बड़ा हिस्सा भारतीय-मूल के लोगों का है। वहाँ एक मेट्रो स्टेशन का नाम ही 'धोबी घाट' है। वहाँ लिटिलइंडिया नामक एक बस्ती भी है, जहाँ जाकर आपको लगेगा कि आप भारत में ही हैं। अंग्रेजी और मलय भाषा के साथ-साथ तमिल भाषा भी वहाँ की सरकारी भाषा है। वहाँ के लोग भारत और भारतीय संस्कृति को बहुत सम्मान देते हैं। विदेशी लोगों को हमारी एक बात बहुत प्रभावित करती है कि हम उनसे बातें करते हुए मुसकराते रहते हैं, प्रसन्नचित्त रहते हैं।

बच्चो! लेखक आगे अपना अनुभव बताते हैं कि जितना वे देख सके, उन्होंने पाया कि सिंगापुर के लोग भूलकर भी अपने देश की कमियों को अपने मुँह पर नहीं लाते।

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं तक पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य :-

सब बच्चे पढ़ाए गए पाठ को अच्छी तरह से दो-तीन बार पढ़ेंगे, समझेंगे। पृष्ठ-128 पर दिए शब्दों के अर्थ अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

धन्यवाद। (अंतिम पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner